ॐ माँ लक्ष्मी का निवास कहाँ? ॐ

Pundit Parmod Sharma

एक समय युधिष्ठिर ने पितामह भीष्म से पूछा कि मनुष्य किन उपायों से दुःख रहित होता है? और कैसे जाना जाय कि मनुष्य दुःखी होने वाला है और सुखी होने वाला है? इसका भविष्य उज्जवल होने वाला है, यह कैसे पता चलेगा और यह भविष्य में पतन की खाई में गिरेगा, यह कैसे पता चलेगा? इस विषय में महाभारत की एक प्राचीन कथा सुनाते हुए भीष्म जी ने कहा कि युधिष्ठिर :

लक्ष्मी क्षीरसमुद्रराजतनयां श्रीरंगधामेश्वी ।

सूर्य की प्रथम किरण से पहले इन्द्र, वरुण और नारद जी स्नान करने के लिए सरिता नदी के तट पर पहुँचे। स्नान किया और मौन पूर्वक जप करते हुए सूर्यनारायण को अर्ध दिया। इतने में सूर्यनारायण की कोमल किरणें उभरने लगीं और एक कमल पर देदीप्यमान प्रकाश छा गया, नारद, इन्द्र ने उस प्रकाशपुंज की ओर गौर से देखा तो माँ लक्ष्मीजी, दोनों ने माँ लक्ष्मी का अभिवादन किया। फिर पूछा कि आप किस पर प्रसन्न होती है? किसके घर में स्थिर रहती है और किसके घर से विदा हो जाती हैं ? आपकी सम्पदा किसको विमोहित करके संसार में भटकाती है और किसको असली सम्पदा भगवान नारायण से मिलाती है? माँ लक्ष्मी कहने लगी मानव समाज के हित के लिए अच्छा प्रश्न किया है। अतः सुनो।

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनि। मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोस्तुते॥

पहले मैं दैत्यों के पास रहती थी क्योंकि वे पुरुषार्थी थे, सत्य बोलते थे, वचन के पक्के थे, कर्त्तव्यपालन में दृढ़ थे, अतिथि का भी सत्कार करते थे, सज्जनों का आदर करते थे और दुष्टों से लोहा लेते थे। जबसे उनके सद्गुण दुर्गुणों में बदलने लगे तबसे मैं तुम्हारे पास देवलोक में आने लगी। समझदार लोग उद्योग से मुझे पाते है, दान से मेरा विस्तार करते हैं, संयम से मुझे स्थिर बनाते है और सत्कर्म में मेरा उपयोग करके शाश्वत हरि को पाने का यत्न करते हैं। सत्य बोलने वाले, वचन में दृढ़, पुरुषार्थी, जहाँ उद्योग, साहस, धैर्य और बुद्धि का विकास होता है और भगवत्परायणता होती है, वहाँ मैं निवास करती हूँ। हे नारद, जो भगवान के नाम का जाप करते हैं, स्मरण करते हैं और श्रेष्ठ आचार करते हैं, इन्द्रियों को संयम में रखते हैं, किसी की निंदा न तो करते हैं न ही सुनते हैं, जिनका दयालु स्वभाव है, जो परोपकार को नहीं भूलते हैं जो अहंकार से रहित हैं जो संतोषी स्वभाव के हैं वहाँ मेरी रुचि बडती है। पूर्व काल में चाहे कितना भी पापी रहा हो, अधम और पातकी रहा हो परंतु जो अभी संत और शास्त्रों के अनुसार पुरुषार्थ करता है, मैं उसके जीवन में भाग्यलक्ष्मी, सुखलक्ष्मी और करुणालक्ष्मी के रुप में आ विराजती हूँ।

तुलसीदास जी ने भी कहा है :-

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना। जहाँ कुमति यहँ बिपति निदाना॥

यहाँ सत्त्वगुण होता है, सुमति होती है, वहाँ सम्पत्ति आती है और जहाँ कुमति होती है वहाँ दु:ख होता है। जीवन में अगर सत्त्व है तो लक्ष्मी प्राप्ति मन्त्र चाहे जपो, चाहे न ही जपो कहते हें -

क्रियासिद्धि वसति सत्त्वे महत्तां नोपकरणे।

सफलता साधनों में नही होती वरन् सत्त्व में निवास करती है जो सुमति का आदर करता हुआ जीवन जीता है, उसका जीवन उज्जवल है जो कुमति का सहारा लेकर सुखी होने की कोशिश करता है वह दुनियाँ में कही भी रहे दु:खी ही रहेगा। जो छल कपट और स्वार्थ का सहारा लेकर सुखी होना चाहता है, उसके पास धन तो आ जाता है पर लक्ष्मी नहीं आ सकती। धन से बाह्य सुख के साधन और नश्वर भोग के पदार्थ मिल सकते है पर उस परमपिता नारायण की प्राप्ति नहीं हो सकती। समय बहुत कीमती है, टुटे हुए घाडे के पानी के समान आयु बीतती चली जा रही है किसी भी कीमत पर आयु बडाई नहीं जा सकती। समय अमृत है, मधु है, समय आत्मा की मधुरता पाने के लिए, भगवद् रस पाने के लिए है।जो समय का तामसी उपयोग करता है उसका भविष्य पशवी योनियों में, अंधकार में जाएगा। जो समय का राजसी उपयोग करता है, उसको भविष्य में सुख सुविधा तो मिलती है पर शन्ति नहीं होती, जो समय का सात्विक उपयोग करता है उस का जीवन सुखमय होता है और वो परमात्मा की ओर

अग्रसर होकर नारायण को पा लेता है। रही सुख-दु:ख की बात, कोई किसी को सुख-दु:ख नहीं देता। मानव अपने भाग्य का आप विधाता है। जैसे हम कर्म करते है वैसा ही हमारा भविष्य बनता है। तुलसीदास जी ने कहा है :-

को काहू को नहीं सुख दु:ख कर दाता। निज कृत करम भोगतहिं भ्राता॥

अंत में भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते है कि तुम्हारे सभी प्रशनों के उत्तर इस लक्ष्मी के साथ इन्द्र और नारद के संवाद के रुप में बता दिए हैं।

- Jai Shri Radha -